वेदों में पर्यावरणीय अध्ययन

Deepika Rai

Sanskrit Department, Mahatma Gandhi Kashi Vidyapeeth, Varanasi-5

Abstract

The grand castle of culture and civilization of Indian Hindu Religion is based on the solid foundation of Vedas. In the first phase of the literary endeavour of this world there is sufficient evidence of not only human behavioural patterns, rituals thought processes but of several scientific elements also. This research paper presents an attempt to provide a brief description of environmental science in our Vedic literature with reference to component of environment, protection of air, protection of water, protection of flora, ozone layer, preservation of land and space and anti-pollution elements.

भारतीय हिन्दू धर्म की सभ्यता एवं संस्कृति का भव्य प्रासाद 'वेद' रूपी आधारशिला पर आश्रित है। भारतीय-परम्परा के अनुसार वेद अपौरुषेय हैं। इसमें भारतीयों के आचार-विचार, रहन-सहन, धर्म-दर्शन, सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन से सम्बन्धित तथ्यों के अतिरिक्त कुछ वैज्ञानिक तथ्य भी निहित हैं। अतः मनु ने 'सर्वज्ञानमयो हि सः' कहा। चूँकि विज्ञान का क्षेत्र व्यापक है अतः उसकी एक शाखा 'पर्यावरण-विज्ञान' पर इस शोधपत्र में चर्चा की जाएगी।

पर्यावरण शब्द - परि, आ √वृञ् + ल्युट् से निष्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है 'चारों ओर से आवृत्त (घिरा हुआ)'। यह किसी एक तत्त्व का नाम नहीं वरन् अनेक संघटक तत्त्वों का समूह है। वेदों में पर्यावरण से संबंधित अनेक मन्त्र उपलब्ध हैं जिनका विवेचन किया जा रहा है-

पर्यावरण के संघटक तत्त्व

अथर्ववेद में वर्णन है कि पर्यावरण के संघटक तीन तत्त्व - जल, वायु एवं औषधियाँ हैं। पृथ्वी को आच्छादित किये हुए ये तत्त्व मनुष्य को लाभान्वित करते हैं अतः ये 'छन्दस्' कहलाते हैं। इसके अतिरिक्त ये पर्यावरणीय संघटक तत्त्व 'पुरुरूपम्' एवं 'देव' पदाभिहित हैं। देव पद से तात्पर्य है- 'दिव्यगुणसमन्वितम्' अतः इन सब तत्त्वों में दिव्य गुण समाहित हैं जो पर्यावरण रक्षण के मुख्योपाय हैं-

त्रीणि छन्दांसि कवयो वि येतिरे पुरुरूपं दर्शतं विश्वचक्षणम्।

आपो वाता ओषधयः तान्येकस्मिन् भुवन अर्पितानि।।[१]

साधारणतया उक्त तीन तत्त्वों के अतिरिक्त भूमि, आकाश, सूर्यादि भी पर्यावरण के घटक हैं।

१- वायुसंरक्षण

वायु प्राणशक्ति है इसके बिना हम जीवन की कल्पना ही नहीं कर सकते हैं। वेद में वर्णित है कि स्वच्छ वायु का सेवन प्राणियों के लिए हितकर है। इसमें ऋग्वैदिक मन्त्र प्रमाण है-

वात आ वातु भेषजं शुभु मयोधु नो हृदे।

प्राण आयूंषि तारिषत्।[२]

अथर्ववेद में वायु और सूर्य दोनों की महत्ता प्रतिपादित की गयी जिसके अनुसार वायु एवं सूर्य संसाररक्षक तथा रोगों के नाशक हैं-

युवं वाये सविता च भुवनानि रक्षथः।[३]

ऋग्वेद के अन्य मन्त्र में ऋषिगण उसमें निहित अमृततत्त्व की याचना करते हैं कि हे वायु! आपके गृहस्थित जो अमृततत्त्व है उसमें से कुछ अंश हमें भी प्रदान कर दीर्घजीवी बनायें-

यददो वात ते गृहे अमृतस्य निधिर्हितः।

ततो नो देहि जीवसे।।[४]

यह अमृततत्त्व ही ऑक्सीजन है।

वायु हमें प्राण देती है तथा मनुष्य के शारीरिक मलों को विनष्ट करती है तथा इसके विपरीत प्रदूषित वायु में श्वास लेने से मनुष्य दुर्बल और अल्पायु होता है। इसका वर्णन वेद के निम्न मन्त्रों में किया गया है-

द्वाविमौ वातौ वात आ सिन्धोरा परावतः।

दक्षं ते अन्यं आ वातु परान्यो वातु यद् रवः।।[५]

आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद् रवः।

Vijnana Bharati

त्वं हि विश्वभेषजो देवानां दूत ईयसे।।[६]

वायु प्रदूषण से शोधन- वायु में उपस्थित अत्यन्त प्रमुख तत्त्व 'अमृत' को नष्ट न होने देने का उपदेश ऋग्वेद में वर्णित है-

नू चिन्नु वायोरमृतं वि दस्येत् ।[७]

इस प्रकार मनुष्य को अपने प्राणों की रक्षा के लिए प्रमुख वातशुद्धि पर विशेष ध्यान देना चाहिए जो वेद में वर्णित है।

२- जलसंरक्षण

अथर्ववेद में ऋषि ब्रह्मा ने जल को जीवा, उपजीवा, सञ्जीवा और जीवला स्वीकार कर 'सर्वमायुर्जीव्यासम्' कहकर जल की अमूल्य महत्ता प्रतिपादित की। अथर्ववेद के निम्न मन्त्रों में-

शं त आवो हैमवती: शमु ते सन्तूत्स्या:।

शं ते सनिष्यदा आप: ते सन्तु वर्ष्या:।।

शं ते खनित्रमा आप: शं या: कुम्भे-भिराभृता।।[८]

विभिन्न स्थान वाले जल अपने-अपने स्थान विशेष के लाभकारी खनिजों, ओषधियों व द्रव्यों जैसे- गंधक, लोहा, अभ्रक आदि से संयुक्त होकर सबके लिए प्रदूषणशामक एवं रोगनाशक होते हैं। जल रोगनाशक है अत: इसे सर्वोत्तम वैद्य कहा गया है।

अप्स्वन्तरमृतम् अप्सु भेषजम् ।[९]

अप्सु .... अन्तर्विश्वानि भेषजा

आपश्च विश्वभेषजी:।[१०]

आप: पृणीत भेषजम् ।[११]

शुद्ध जल के महत्त्व का प्रतिपादन करते हुए वेद में पुन: वर्णित है कि शुद्ध जल का पान और उसमें स्नान से शारीरिक मलिनता दूर होती है।

शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।

शं योरभिस्त्रवन्तु न:।

वह जल ही मानववर्ग एवं वनस्पतिवर्ग के लिए रक्षक है जो मधुस्रावी एवं पवित्र हो-

मधुश्चुत: शुचयो या: पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु।[१२]

जलशोधन- जल को प्रदूषण से मुक्त रखने के उपायों पर ऋषियों ने विचार किया है। वैदिक काल में जल में फैलने वाले कृमियों को दूर करने के लिए अजशृंगी, गुग्गुल, पीलू, माँसी, औक्षगन्धी, प्रमोदिनी आदि औषधियों तथा पीपल, वट, शिखण्डी, अर्जुन आदि वृक्षों का प्रयोग होता था। इसके साथ जलसञ्चयन को भी प्रोत्साहित किया गया है।

प्रस्तुत मन्त्र में -

यासु राजा वरुणो यासु सोमशै विश्वदेवा यासूर्ज मदन्ति।

वैश्वानरो यास्वग्नि: प्रविष्टस्ता आपो देवीरिह मामवन्तु।।[१३]

कहा गया है कि वे दिव्य जल हमारे लिए सुखदायक हों, जिसमें वरुण विश्वेदेवा और वैश्वानराग्नि प्रविष्ट है। यहाँ वरुण शुद्धवायु या कोई जलशोधक गैस हो सकता है, सोमलता, विश्वेदेवा सूर्य की किरणें तथा वैश्वानर - सामान्य अग्नि या विद्युत् हो सकती है। यहाँ तात्पर्य है कि इनसे प्रदूषित जल को स्वच्छ किया जा सकता है। यजुर्वेदीय अन्य मन्त्र में वर्णित है कि प्राकृतिक रूप से सूर्यताप को जल में पहुँचा कर जल शुद्ध किया जाता है।

सवितुर्व: प्रसव उत्पुनाम्येच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभि:।[१४]

नदियों के जल को प्रदूषित होने से बचाने के लिए ऋग्वेद के सप्तम मण्डल के मन्त्रों में वर्णित है कि यदि नदियों में विष (प्रदूषक तत्त्व) उत्पन्न हो गये तो विद्वान् मिलकर उन्हें दूर कर लें-

यन्नदीषु..... परिजायते विषम् ।

शिवा देवीरशिपदा भवन्तु, सर्वा नद्यो अशिमिदा भवन्तु।[१५]

इस प्रकार जल को स्वच्छ, शुद्ध, पवित्र रखकर मनुष्य पर्यावरण को भी स्वच्छ रख सकता है।

३- वृक्ष-वनस्पतियों का संरक्षण

वृक्ष-वनस्पतियों में दैवीशक्ति-वैदिक साहित्य में वृक्ष-वनस्पतियों का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए कहा गया है कि वनस्पतियों में सभी देवों की शक्तियाँ विद्यमान हैं। जिससे मनुष्य को जीवनशक्ति मिलती है और उनकी रक्षा होती है।

वीरूधो वैश्वदेवी: उग्रा: पुरुषजीवनी:।[१६]

अन्य मन्त्र में औषधियाँ प्रदूषणापकारिका हैं अत: इन्हें 'विषदूषणी' कहा गया है।

उग्रा या विषदूषणी: ..... ओषधी:।[१७]

अथर्ववेद में इसी देवत्व की सिद्धि को बताने के लिए कहा गया है-

वनस्पति: सह देवैर्न आगन्, रक्ष: पिशाचन् अपबाधमान:।[१८]

Vijnana Bharati

शतपथब्राह्मण में वनस्पतियों में शिवत्त्व की स्थापना की गयी है-

ओषधयो वै पशुपतिः।[१९]

यजुर्वेद के रुद्राध्याय में वर्णित है कि वृक्ष, वन, ओषधियों के स्वामी रुद्र (शिव) हैं। शिव विषपान करके अमृत प्रदान करते हैं वैसे ही वृक्षादि विषरूप कार्बनडाई-ऑक्साइड का पान कर अमृत प्रदान करते हैं।

नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः।

वनानां पतये नमः।वृक्षाणां पतये नमः।

आख्यानां पतये नमः।[२०]

यजुर्वेद में अन्यत्र ओषधियाँ (वृक्षादि) माता रूप में वर्णित हैं-

ओषधिरिति मातरः।[२१]

वृक्ष-वनस्पतियाँ जीवनाधायक- ऋग्वेद में वृक्षवनस्पतियों के लिए कहा गया है कि ये प्राणवायु (ऑक्सीजन) रूपी अमृत के दाता, वृद्धि हेतु शक्ति प्रदान करने वाले हैं अतः ये स्तुत्य हैं-

नित्यस्तोत्रो वनस्पतिः

धीनामन्तः सबर्दुघः।।[२२]

वृक्ष मधुफलदायी हैं, ये ही वर्षा में सहायक हैं-

वनस्पतिः देवमिन्द्रम् अवर्धयत् ।

पृथ्वीम् अदृंहीत् ।[२३]

वेदों में विशिष्ट वृक्षों की उपयोगिता वर्णित की गयी है। अपामार्ग नामक वृक्षविशेष जहाँ होता है वहाँ भय, रोग एवं प्रदूषण नहीं आ सकते।

अपामार्ग..... न तत्र भयमस्ति, यत्र प्राप्नोष्योषधे।[२४]

इसी प्रकार गूगल की सुगन्ध से बीमारियाँ आकृष्ट नहीं होती।

न तं यक्ष्मा अरुधन्ते.....

यं भेषजस्य गुल्गुलोः सुरभिर्गन्धो अश्नुते।[२५]

इनके अतिरिक्त अजशृंगी, नलदी, औक्षगन्धी, प्रमन्दनी आदि ओषधियाँ कृमिनाशक एवं वायुशोधक हैं।

वृक्ष वनस्पतियों का रोपण एवं सम्वर्धन- चूँकि वृक्षादि ऑक्सीजन निष्कासित करते हैं जो वायु को शुद्ध करता है अतः कहा गया है कि-

वन आस्थाप्यध्वम् ।[२६]

मनुष्य के अत्यधिक वृक्ष कर्तन से जल-प्लावन की सिथति भी उत्पन्न हो सकती है अतः इस स्थिति से रक्षा हेतु वेद में रहा गया है-

अयं हि त्वा स्वधितिस्तेतिजानः प्रणिनाय महते सौभाग्याय।

अतस्त्वं देव वनस्पते शान्तवल्शो विरोह,

सहस्रवल्शा वि वयं रूहेम।।[२७]

वैदिक ऋषि इन सहस्रपत्तों वाले ओषधियों से प्रार्थना करता है कि हमें प्रदूषणजनित मृत्यु से बचायें-

यावतीः कियतीश्चेमाः पृथिव्यामध्योषधीः।

ता मा सहस्रपर्ण्यो मृत्योर्मुञ्चन्त्वंहसः।।[२८]

कृत्रिम रासायनिक उर्वरकों से अन्नादि अप्रत्यक्षतः प्रदूषित हो रहा है अतः इसकी सतर्कता हेतु कहा गया-

अन्नपतेऽन्नस्य नो देहि अनमीवस्य शुष्मिणः।२९

हमारा अन्नदूषित एवं रोगोत्पादक न होकर शक्तिवर्धक हो। पर्यावरण शुद्धि के लिए अथर्ववेद का मन्त्र द्रष्टव्य है-

आयने ते परायणे दूर्वा रोहतु पुष्पिणीः।

उत्सो वा तत्र जायतां हृदो वा पुण्डरीकवान्।।[३०]

इस प्रकार पर्यावरण-संरक्षण के मुख्य घटक ये ओषधियाँ अर्थात् वृक्ष-वनस्पतियाँ आदि हैं।

४- *ओजोन परत*

पृथ्वी के ऊपर विद्यमान परत का उल्लेख वेद में किया गया है जो वर्तमान समय में 'ओजोन' नाम से चर्चित है। ओजोन के लिए वेद में 'महदुल्ब' शब्द का प्रयोग हुआ है। उल्ब का तात्पर्य गर्भस्थ शिशु के ऊपर ढका आवरण अतः पृथ्वी शिशु है उसके रक्षणार्थ यह परत विद्यमान है। इसका वर्ण स्वर्णिम है-

तस्योत जायमानस्य उल्ब आसीद् हिरण्ययः।[३१]

ऋग्वेद के मन्त्र-

महत् तदुल्बं स्थविरं तदासीद् येनाविष्टिताः प्रविवेशिथापः।[३२]

में कहा गया है कि ओजोन स्थविर (स्थूल) है तथा पृथिवी को आवेष्टित कर रक्षा करता है।

५- *भू एवं द्यु-संरक्षण*

'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः'[३३]

कहकर वेद में भूमि को माता स्वीकार किया गया है और यह भूमि-

Vijnana Bharati

विश्वभारावसुधानी प्रतिष्ठा हिरण्यवक्ष जगतो निवेशनी।[३४]

विश्व का पालन करने वाली है, धनों की खान और प्रतिष्ठा देने वाली है तथा जगत् को अपने ऊपर बसाने वाली है।

इसी प्रकार वेद में द्युलोक को पिता वर्णित किया गया है-

भूमिर्माता भ्रातन्तरिक्षम् द्यौर्नः पिता।[३५]

भूमि हमें वृक्ष-वनस्पति ओषधिरूप अतुल्य सम्पदा प्रदान करती है। जिससे वृक्षादि हमें प्राणवायु अर्थात् ऑक्सीजन देने में सक्षम होते हैं-

भूमिष्ट्वा पातु हरितेन विश्वभृद् अग्निः पिपर्तु अयसा सजोषाः।

वीरुद्भिष्ट अर्जुनं संविदानं दक्षं दधातु सुमनस्यमानम् ।।[३६]

द्युलोक एवं पृथिवीलोक मनुष्य हेतु ऊर्जा प्रदान करते हैं-

दिवः पृथिव्याः पर्योज उद्भृतम् ।[३७]

अन्यत्र वर्णित है कि द्यु, अन्तरिक्ष, पृथ्वी और ओषधियाँ रस और शक्ति के स्रोत हैं-

पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।[३८]

ऋग्वैदिक एक मन्त्र में पृथ्वी माता दुग्ध एवं अन्न तथा द्युलोक अमृत प्रदान करते हैं, द्यौ पिता अमृत दो रूपों में देते हैं - (क) सूर्य से ऊर्जा एवं प्रकाश रूप में, (ख) बादलों से जल रूप में।

येभ्यो माता मधुमत् पिन्वते स्वः। पीयूषं द्यौः।[३९]

द्यु-भू की प्रदूषण एवं क्षतिमुक्ति-पृथिवीसूक्त में मनुष्यों को पृथिवी का हरण और उत्खनन से रक्षा का सन्देश दिया गया। कहा गया है कि अपने आश्रय की रक्षा अवश्य करनी चाहिए-

सत्यं बृहत् ऋतम् उग्रं दीक्षा तपः ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।

सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकम् पृथिवी नः कृणोतु।।[४०]

मनुष्य विवशतावश पृथिवी के खनन में प्रवृत्त होता है परन्तु उसका यह भी कर्तव्य है कि पृथिवी का खनन वैदिक भाव से करे-

यत् ते भूमे विखनामि क्षिप्रं तदपि रोहतु।

मा ते मर्म विमृग्वरि मा ते हृदयमर्पिपम्।।[४१]

इन्हें प्रदूषणमुक्त रखने के लिए वेद में निर्देशित किया गया है-

द्यां मा लेखीः ..... पृथिव्या संभव।[४२]

दिवं दृंह, दिवं मा हिंसीः।[४३]

पृथ्वीं दृंह, पृथिवीं मा हिंसीः।[४४]

इस प्रकार वेद पृथिवी, द्यु एवं अन्तरिक्ष आदि के महत्त्व को प्रकाशित करते हुए इनके रक्षण का उपदेश देता है।

६- प्रदूषण - निवारक तत्त्व

वेदों में पर्यावरण के शोधन में उक्त घटकों को संवृद्ध एवं दृढ़ करने के साथ अन्य प्रदूषण-निवारक साधनों जैसे - अग्नि (यज्ञ), सूर्य, शब्दशक्ति, पर्वतादि जो पर्यावरण को शुद्ध करने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं, इनका भी वर्णन उपलब्ध है।

(क) अग्नि- अग्नि अपने दाहकता गुण से वातावरण में उपस्थित कीटाणुओं को नष्ट करती है। वेद में इसी कारण इसे पावक, अमीवचातन, पावक्शोचिष् सपत्नदम्भन विशेषणों में विशेषित करके इसकी शोधकता प्रदर्शित की गयी। अथर्ववेद में-

इदं हविर्यातुधानान् नदी फेनमिवावहत।[४५]

अर्थात् अग्नि में होम की गयी हवि वायुमण्डल के रोगकृमि रूप यातुधानों को वैसे ही विनष्ट कर देती है जैसे नदी झागों को।

ऋग्वेद के एक मन्त्र में ऋषि कामना करता है कि -

"वायवा याहि वीतये जुषाणो हव्यदातये"

अग्नि विश्वशुच् है-

प्राग्नये विश्वशुचे ..... असुरघ्न।[४६]

(ख) सूर्य- पर्यावरण में प्रदूषण से बचाव के लिए वेदों में सौर ऊर्जा को अत्युपकारक बताया गया है। सूर्य दृष्टादृष्ट सभी प्रकार के प्रदूषणों को नष्ट करता है।

उत् पुरस्तात् सूर्य एति विश्वदृष्टो अदृष्टहा।

दृष्टान् च घ्नन् अदृष्टान् च सर्वान् च प्रमृणन् क्रिमीन्।।[४७]

वायुमण्डल के प्रदूषण सूर्य-किरणों से दूर हो जाते हैं-

सविता पुनातु अछिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।।[४८]

(ग) शब्दशक्ति- वेदों में शब्दशक्ति का माहात्म्य प्रतिपादित है। शब्द विश्वव्यापी शक्ति हैं।

यावद् ब्रह्म विष्ठितं तावती वाक्। यावद् द्यावापृथिवी तावदित् तत्।[४९]

मन्त्र द्वारा शब्दशक्ति की विश्वव्यापकता सिद्ध होती है।

Vimana Bharati

सुस्वर एवं मधुर वाणी 'ओषधी' एवं उच्च स्वर में उच्चरित कठोर वाणी 'वज्र' के समान होती है-

वाग् उ सर्व भेषजम् ।[५०]

वाग् हि वज्रः।[५१]

(घ) पर्वत- वेदों में पर्वतों का भी महत्त्व निर्दिष्ट किया गया है कि पर्वत शुद्ध वायु देकर मृत्यु से रक्षा करते हैं अतः पर्वत रक्षणीय हैं-

अन्तर्मृत्युं दधता पर्वतेन।[५२]

स्वास्थ्यलाभार्थ पर्वतों का आश्रय करना चाहिए-

तुजे नस्तने पर्वताः सन्तु स्वैतवः।[५३]

इस प्रकार वेदों में पर्यावरणीय घटकों का वैज्ञानिक पद्धति से वर्णन प्राप्त होता है, जो इस समय भी अनुकरणीय है।

सन्दर्भ :

१. अथर्व० १८/१/१७

२. ऋग्वेद १०/१८/१६

३. अथर्व० ४/२१८/३

४. ऋग्वेद १०/१८६/३

५. ऋग्वेद १०/१३७/२

६. अथर्व० ४/१३२/३

७. ऋग्वेद ६/३७/२

८. अथर्व० १९/२/१-२

९. ऋग्वेद १/२३/१९

१०. ऋग्वेद १/२३/२०

११. ऋग्वेद १/२३/२१

१२. ऋग्वेद ७/४९/३

१३. ऋग्वेद ७/४९/५

१४. यजु० १/१२/३१

१५. ऋग्वेद ७/५०/३-४

१६. अथर्व० ८/७/४

१७. अथर्व० ८/७/१०

१८. अथर्व० १२/३/१५

१९. शत०ब्रा० ६/१/३/१२

२०. यजु० १६-१९

२१. यजु० १२/७८

२२. ९/१२/७

२३. यजु० २८/२०

२४. अथर्व० ४/१९/२

२५. अथर्व० १९/३८/१

२६. अथर्व० १०/१०१/११

२७. यजु० ५/४३

२८. अथर्व० ६/१०/६

२९. यजु० ११/८३

३०. अथर्व० १९६

३१. अथर्व० ४/२/८

३२. १०/५१/१

३३. अथर्व० १२/१/१२

३४. ऋग्वेद १२/१/१६

३५. अथर्व० ६/१२०/२

३६. अथर्व० ५/२८/५

३७. यजु० २९/५३

३८. यजु० १८/३६

३९. ऋग्वेद १०/६३/३

४०. अथर्व० १२/१/१

४१. अथर्व० १२/१/३५

४२. यजु० ५/४३

४३. यजु० १७/६४

४४. यजु० १३/१८

४५. १/८/२

४६. ऋग्वेद ७/१३/१

४७. ऋग्वेद १/१९१/८

४८. यजु० ४/४

४९. ऋग्वेद १०/११४/८

५०. शत० ब्रा० ७/२/४/२८

५१. ऐतरेय ब्रा० ४/१

५२. ऋग्वेद १०/१८/४

५३. ऋग्वेद ५/४१/९

Vijnana Bharati